पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 4, अंक 44 | माह - नवंबर 2022, मूल्य - निःशुल्क

आपके विकास को समर्पित

॥ विचार समिति ॥

(स्थापना वर्ष 2003)

विचार मोहल्ला परिवारों द्वारा बनाए गए गोबर से बने दियों ने मचाई देश भर में धूम

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 4, अंक - 44, नवंबर - 2022

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

Email: sanstha.vichar@gmail.com
Phone: 9575737475
07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

1. 13 राज्यों में पहुंचे गोबर से निर्मित दिये 04

2. दिल्ली, मथुरा सहित कई राज्यों में गोबर के दियों के स्टॉल लगे 05

3. गोमय दियों को प्रोत्साहित करने वाले क्रेताओं के विचार 06

4. गोमय दियों के स्टॉल की झलकियां 07

5. वैश्वीकरण की दुनिया में महिलाओं को सशक्त बनाने में मीडिया की भूमिका 10

6. लीफी चेंजमेकर्स फैलोशिप अभियान से जुड़े पांच शिक्षकों के सफलता की ओर बढ़ते कदम 12

7. क्वेस्ट अलायन्स संस्था एवं विचार समिति मिलकर करेंगे शिक्षक प्राशिक्षण और महिला स्वरोजगार पर कार्य 19

8. खुशियां बांटने से बढ़ती हैं और दुख बांटने से घटता है : कपिल मलैया 21

9. कपिल मलैया को गौरव सम्मान से नवाजा गया 22

मीडिया कवरेज :- 23

13 राज्यों में पहुंचे गोबर से निर्मित दिये

ऑनलाइन माध्यम से हुआ विक्रय

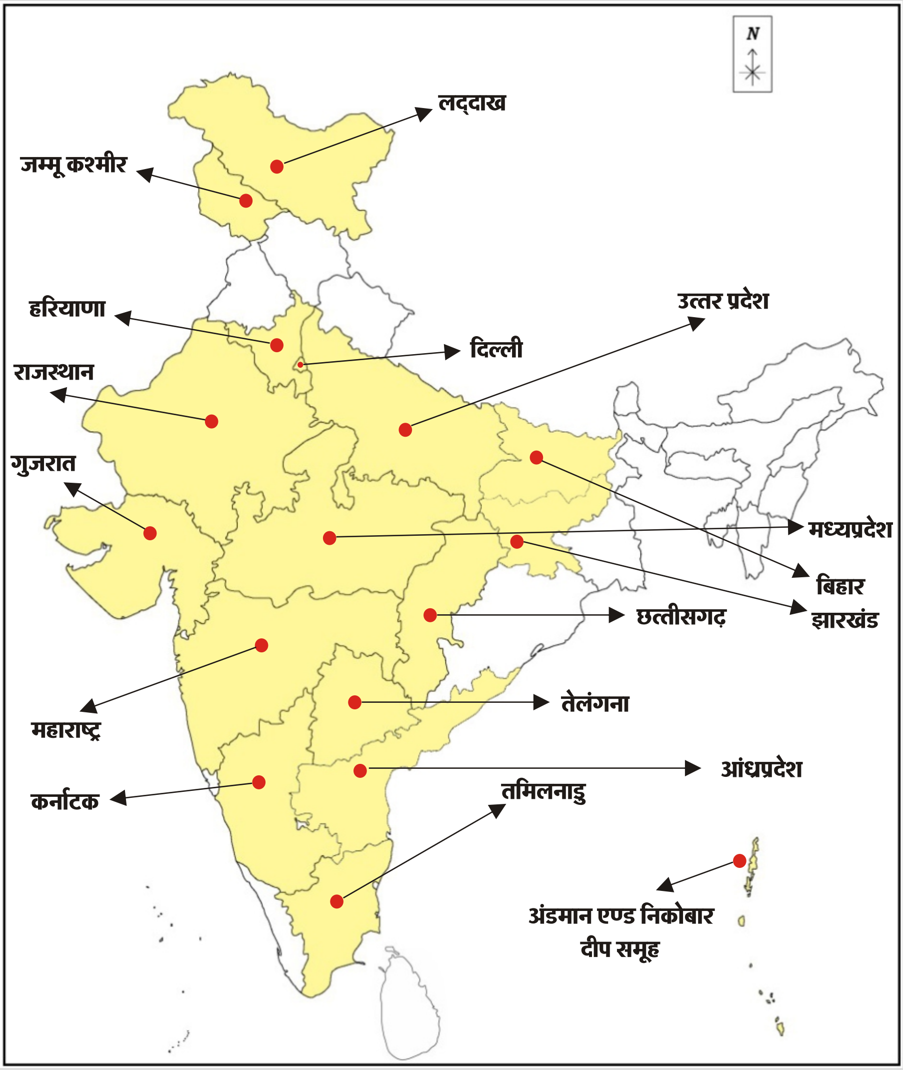

विचार समिति द्वारा दीपावली के पावन अवसर पर गोबर से निर्मित दिये ऑनलाइन प्लेटफार्म द्वारा तेलंगना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, झारखंड, आंध्रप्रदेश, बिहार आदि 13 राज्यों एवं दिल्ली, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, अंडमान एण्ड निकोबार दीप समूह से आर्डर मिलने पर समिति द्वारा पहुंचाए गए।

दिल्ली, मथुरा सहित कई राज्यों में गोबर के दियों के स्टॉल लगाए

दिये की विशेषताएं :-

- आग न पकड़ने वाले
- रसायन मुक्त
- प्राकृतिक तत्व युक्त
- पानी में तैरने वाले
- प्रदूषण रहित
- वातावरण शुद्ध
- गौसेवा के माध्यम
- खाद बन जाने वाले

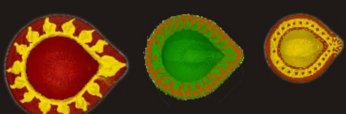

देशबंधु कॉलेज दिल्ली में मीनू और मोनिका जी ने गोबर से बने दियों का स्टॉल लगाया।

गोबर दिया परियोजना की शुरुआत समिति द्वारा 2020 में महिला सशक्तीकरण, प्रकृति संरक्षण, स्वरोजगार के साथ आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लक्ष्यों के साथ की गई है। परियोजना के तीसरे चरण में 750 महिलाओं ने सात लाख दिये बनाकर स्वरोजगार प्राप्त किया है। दिया बनाने के लिए समिति द्वारा महिलाओं को प्रशिक्षण, पूरी सामग्री वितरित की गई थी। महिलाओं को 10 लाख से अधिक रुपयों का भुगतान किया गया। इन दियों को विक्रय के लिए बाजार में उपलब्ध करवाया गया था। इन दियों की भारत के लगभग 13 राज्यों के साथ 90 शहरों से मांग आई थी। इसका सकारात्मक पहलू यह रहा कि गोबर से बने दियों का एक बार उपयोग करने बाद पुनः इन दियों का उपयोग किया जा सकता है। इन दियों के माध्यम से 250 गायों को संरक्षण मिला, लगभग 35 हजार किलोग्राम मिट्टी को उपजाऊ होने से बचाया गया। यह दीपक पूर्णतः प्राकृतिक तत्वों से बने है। गोबर से बने दियों का शहर की प्रतिष्ठित दुकानों के साथ कई जगहों पर स्टॉल लगाये गये।

गोमय दियों को प्रोत्साहित करने वाले क्रेताओं के विचार

● भारत को स्वावलंबी बनाने में विचार समिति की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है। पूरे समय समान गुणवत्ता का ध्यान रखकर कार्य किया गया।

– जीतेन्द्र भकने स्वानंद गौविज्ञान केंद्र, नागपुर महाराष्ट्र

● गोबर से बने दिए बहुत अच्छे हैं। हम अपने ग्राहकों को दिवाली के अवसर पर भेंट कर रहे हैं। लोग काफी पसंद कर रहे हैं। उन्हें एक नई चीज देखने को मिल रही है। साथ ही यह दिये प्राकृतिक होने के कारण बहुत ही लाभकारी है। मैं पूरी समिति तथा सभी महिलाओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। यह उनके जीविकोपार्जन का साधन और अधिक रूप से सहयोगी बने। मेरा हमेशा सहयोग रहेगा।

अभय दुग्गड़, छिंदवाड़ा

● विचार समिति ने गोबर से निर्मित दिये बनाकर पूरे विश्व को प्राकृतिक उत्पादों से जुड़ने का अवसर दिया है। यह ऐतिहासिक कदम है। समिति संस्थापक अध्यक्ष इजी. कपिल मलैया जी जिन्होंने सागर सुधार- सागर विकास के उदेश्य से मोहल्ला विकास योजना की शुरुआत की और आर्थिक रूप से निचले तबके को साथ लिया, यह दिये निश्चित तौर पर निर्धन परिवारों के लिए आय का जरिया बनेगें साथ ही गौ सेवा के भागीदार बनेगें।

अनुराग विश्वकर्मा सागर

● गोबर से बने दिए बहुत ही अच्छे है, लोगों तक इनकी जागरूकता पहुंचनी चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि लोगों के मन में विक्रय मूल्य को लेकर उन्हें लगता है कि अधिक है तो खरीदने से पीछे हटते हैं।

हिमांशु मिश्रा

● वजन में बहुत हल्के, कलर के साथ बहुत सुन्दर लग रहे है। मैं अपने ग्राहकों को इन दियों से जोड़ रहा हूं। एक बार खरीदने के पश्चात उनके परिचित स्वयं खरीदने आते है। इसमें सबसे अच्छी बात यह है कि आग नहीं पकड़ते है। मैं आगे से इन दियों को और अधिक मात्रा में लोगों तक पहुंचाने में मदद करूंगा।

– ग्लानी ट्रेडर्स

गोमय दियों के स्टॉल की झलकियां

समिति देश प्रमुख भुवनेश सोनी के मार्गदर्शन में मथुरा में दियों के 6 से अधिक स्टॉल लगाए गए।

स्वदेशी वस्तु भंडार के सामने लगे स्टॉल से लोगों ने खरीदे रंग-बिरंगे दिये।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर आदर्श गार्डन में लगाया गोबर के दियों का स्टॉल।

गोमय दियों को प्रोत्साहित करने वाले क्रेताओं के विचार

● यह कार्य स्वालंबन, स्वदेशी का जागरण, निर्धन परिवारों को रोजगार मिला यह बहुत ही सरहनीय कार्य है। मेरी उत्सुकता की वजह का मुख्यत: यह कारण रहा कि गोबर का प्रयोग इस तरह से किया गया है कि यह आग नहीं पकड़ता और न ही इन दियों में कोई रासायनिक तत्व है। जिससे किसी तरह का कोई नुकसान हो। हम जब इन दियों को लेकर परिवारों एवं समाज में गए तो समाज ने इस कार्य का स्वागत किया। हमारा अनुभव यह रहा कि यह कार्य आगे निरंतर बढ़ता रहे। हमने जिन परिवारों से बात की उनका भी यही मत रहा। निश्चित तौर पर हम अच्छी दिशा की ओर बढ़ेंगे।

– रविंद्र ठाकुर एवं हिमांशु विश्वकर्मा

● यह दिए बहुत अच्छे है, मैं सभी को भेंट कर रहा हूं। इसका सकारात्मक प्रभाव आगे स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। आप सभी को मेरी शुभकामनायें।

मुकेश साहू, राधा कृष्णा रेस्टोरेंट

● गोमय दियों के माध्यम से समाज को प्राकृतिक वस्तुओं का संदेश दे रहे है। जागरूकता का अभाव अवश्य महसूस किया जा सकता है। मुझे उम्मीद है कि आगे चलकर गोबर से बने उत्पादों को बहुत अच्छा महत्व मिलेगा। जब सभी समझेंगे यह दिये चहुंमुखी रूप से लाभदायक है।

– निर्मला राजपूत, मोठी ग्राम

● मैंने दियों को सौरभ जी के स्टेट्स पर देखा था। अन्य दियों की तुलना में यह काफी आकर्षक लग रहे थे। मुझे लगा इन दियों और अन्य दियों में क्या अंतर है। ऑडर कर मैने इन दियों का प्रयोग पहली बार किया है । यह दिया काफी हल्का था। सबसे अच्छा मुझे पैकेजिंग लगी । मैंने अपने परिचितों को गोबर दियों की जानकरी दी सभी को बहुत अच्छी लगी। मैंने इतने सालों में दीवाली के अवसर पर कुछ नया देखा। साथ ही इनका कोई अपशिष्ट शेष नहीं बचता है।

अनुज जैन डोंगरगांव, छत्तीसगढ़

● मैंने गोबर से बने दिये को नवरात्र के शुभ अवसर पर 15 डिब्बे खरीदे थे। यह दिये मोहल्ले के सभी लोगों ने जलाए थे। मैंने लगातार 20 दिन तक इन दियों का उपयोग किया। मैं पुन: इन दियों को दिवाली के अवसर पर ले जा जा रहा।

अलोक इटोरिया, टीकमगढ़

गोमय दियों के स्टॉल की झलकियां

पिंक बाजार में लगाया स्टॉल। विचार समिति की सदस्य भाग्यश्री लोगों को गोबर के दियों का महत्व बताती हुई।

समिति से जुड़े स्वयं सेवक रविन्द्र ठाकुर एवं हिमांशु विश्वकर्मा ने जगह-जगह गोबर से बने दियों का महत्व बताया। फोटो में पटाखा की दुकान पर दिये रखवाए गए।

रॉयल पैलेस (किला कोठी) में लगे बाजार में विचार समिति की सदस्य पूजा प्रजापति, भाग्यश्री राय ने गोबर से बने दियों की प्रदर्शनी लगाई।

वैश्वीकरण की दुनिया में महिलाओं को सशक्त बनाने में मीडिया की भूमिका

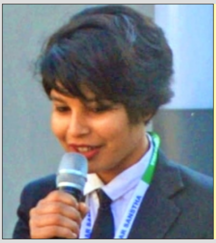

एड. अभिलाषा जाटव

एक समय था, जब स्त्री घर की चारदीवारी में कैद रहती थी। उसकी पूरी जिंदगी घर और घर से जुडे मामलों तक ही सिमटी रहती थी लेकिन समय बदलने के साथ स्त्रियों की स्थिति में भी बदलाव आया। वे घर की दहलीज को पार कर बाहर निकलने लगीं और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगीं। पुरुष और स्त्री समानता की लडाई में यह उसका पहला कदम था लेकिन मंजिल अब भी दूर थी।

घर से बाहर आने पर उसकी मुश्किलें पहले के मुकाबले कई गुना बढ़ गई थीं, जिस पर टीवी, समाचार पत्रों और रेडियो पर चर्चाएं भी हो रही थीं लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकल रहा था। ऐसे ही दौर में सोशल मीडिया ने जिसने स्त्रियों को न केवल एक मंच दिया बल्कि दुनिया से खुद मुखातिब होने का अवसर भी प्रदान किया। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार को लेकर लंबे समय से वैश्विक स्तर पर बहुत सारी समस्या रही है और समय समय पर इसके लिए कदम भी उठाए गए हैं। आजादी के बाद पारंपरिक मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, और समाचार पत्रों से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने की उम्मीद की गई लेकिन इस पारंपरिक मीडिया ने यथास्थिति को ही बनाए रखा और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बहुत सकारात्मक परिणाम आते हुए नहीं दिखे। शासन और नीतियों के स्तर पर कई बार प्रगति के तत्व देखने को मिल जाने के बावजूद हकीकत तो यह है कि महिलाएं आज भी व्यावहारिकता में हर तरह की समस्याओं से जूझ रही हैं। संसद में आज महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग ग्यारह प्रतिशत है। माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा तक केवल साढ़े छब्बीस प्रतिशत महिलाओं की पहुंच है और दुनिया भर में कुपोषण से मरने वाले बच्चों की तादाद भारत में ही सबसे ज्यादा है जिसमें अधिकतर संख्या बच्चियों की है। हमारी प्रगति तभी होगी जब राजनीति से लेकर अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य से लेकर शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएं सशक्त बन जाती है।

आज आवश्यकता है कि महिलाओं को हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए, हर उस महिला का सम्मान करना चाहिए जो अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष करती है, पक्षी के लिए एक पंख पर उड़ना संभव नहीं फिर मानव सभ्यता का भला कैसे हो सकता है। महिलाओं की स्थिति में सुधार आने से ही दुनिया का उत्थान संभव है। आज वैश्वीकरण के प्रभाव से पूरे विश्व का कोई भी देश अछूता नहीं रह गया है इसकी नवीन प्रक्रिया में मुख्य रूप से नवीन संचार के माध्यमों की भूमिका है। सूचना और संचार नि:संदेह दो शब्द है जो वैश्विक हलचल का प्रतिनिधित्व करते हैं। वैश्वीकरण के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी ने महिलाओं को सशक्त बनाने में पिछले दशकों में विकासशील देशों में महिलाओं के जीवन स्तर पर जबरदस्त प्रभाव दिखाई देता है। आज वर्तमान में महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने के साथ वे मुखर हुई है।

आज की महिला आत्मनिर्भर के साथ सभी क्षेत्रों

में जागरूक हुई है। पुराने उद्दीपनों से मुक्त दिखाई देती हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में महिलाएं इंटरनेट का प्रयोग करके अपने जीवन में बहुत ही सुगमता से कर रही हैं। समाज में होने वाली गतिविधियों से भी वंचित नहीं है समाज की मुख्यधारा से जुड़ी हुई है वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं के लिए विभिन्न प्रकार के रोजगार के नए-नए आयाम प्रदान किए हैं उनके सशक्तिकरण के लिए सहायक सिद्ध हो रहे हैं ।

अब भी देश में महिलाओं की आधी आबादी होने के कारण उन्हें आज भी उन्हें सबसे अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस समय ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें महिलाओं ने सफलता के झंडे ना गाड़े हो, बावजूद इसके बाद भी इस समय में अपनी जगह नहीं बना पाई है। इसके लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं है, लेकिन जनसंपर्क के माध्यम के जरिए प्रारंभ में महिलाओं की स्थिति में जो सकारात्मक बदलाव आए उनकी वजह से लोगों की अपेक्षाएं मीडिया से बढ़ जाती है कई मामलों में मीडिया महिलाओं के विकास एवं उनके सशक्तिकरण में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा रहा लेकिन साथ ही समाज में महिलाओं के प्रति स्टीरियोटाइप्ड बिगड़ रहा है। जो महिलाओं के विकास एवं सशक्तिकरण की राह में सबसे बड़ा रोड़ा बनकर खड़ा हो जाता है।

विज्ञापन और स्त्री को लेकर जो अध्ययन है उन्होंने यह सिद्ध किया है कि विज्ञापन में एक खास क़िस्म की लिंग आधारित सोच काम करती है जो स्त्री के लिए असमानता- धर्मी और पतनशील है। स्त्री को लेकर यहां जो मिथ रचे जाते हैं वे हमारी ह्रासशील मानसिकता का पता देते हैं। आज डिजिटल क्रांति के युग में नई मीडिया से उम्मीद बनी है कि यह एक ऐसा प्लेटफार्म बने, जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार की संभावना काफी हद तक की जा रही है, लेकिन क्या नई मीडिया वाकई में महिलाओं की स्थिति में सुधार ला पा रहा है ? एक बड़ा प्रश्न है। नई मीडिया एक ऐसा माध्यम है जहां कोई किसी भी व्यक्ति की अभिव्यक्ति की आजादी को सीमित नहीं कर सकता है। नई मीडिया इंटरनेट आधारित एक ऐसा संचार है जिसमें इसे इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति ऑनलाइन समुदाय बनाकर उसके साथ किसी भी प्रकार की सूचना, विचार, व्यक्तिगत संवाद, वीडियो और ऑडियो संवाद कर सकता है। ब्लॉक, वेबसाइट्स, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि प्रचलित नई मीडिया बेशक आज की तारीख में नई मीडिया महिलाओं के पक्ष में बहुत प्रभावकारी हथियार के रूप में उभरा है। यद्यपि इस मीडिया ने महिलाओं को अभिव्यक्ति की आजादी दी है, वह बिना किसी मध्यस्थता के अपनी सोच अपने विचारों को लोगों के सामने रख सकती हैं। इसके सकारात्मक पहलू है साथ ही नकारात्मक पहलू भी हैं। कई दफे ऐसा भी होता है कि चीजें सामने आ ही नहीं पाती है। आज सोशल मीडिया पर अगर कोई स्त्री मुखर होकर अपनी प्रतिक्रिया देती है तो उसे मर्यादा का पाठ पढ़ाने वाले ही नहीं, उसकी निजी अमर्यादित टिप्पणियां करने वाले भी सामने आते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने उपलब्ध है। यहां तक कि लेखिका हो या महिला पत्रकारों को भी नहीं छोड़ा जाता है।

मेकब्रिज कमीशन ने अपने शोध के तथ्यों की पुष्टि करते हुए कहा है कि विकसित देशों या विकासशील देश हो स्त्री की छवि के निर्णायक तंतु सामाजिक सोच पर निर्भर करते हैं और मीडिया क्षेत्र में एक बड़ा जिम्मेदार कारक माना जाता है जो समाज में स्त्री विषयक सोच को गंभीर तथा छिछले सतहों दोनों स्तरों पर आधिकारिक रूप से प्रभावित करता है। मीडिया की जिम्मेदारी अभी खत्म नहीं हुई है खासकर महिलाओं के मुद्दों को लेकर मीडिया को अब और अधिक गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

सक्सेस स्टोरी

लीफी चेंजमेकर्स फैलोशिप अभियान से जुड़े पांच शिक्षकों के सफलता की ओर बढ़ते कदम

लर्निंग इनिसेटिव फॉर इंडिया तथा विचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में 'लीफी चेंजमेकर्स फैलोशिप' अभियान पिछले तीन माह से संचालित है। यह अभियान कक्षा एक से पांचवी के स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को पुनः स्कूल से जोड़ने के उदेश्य से शुरू किया गया था। इन बच्चों को ढूढ़ने और शिक्षा से जोड़ने तथा उन्हें आजीवन सीखने के लिये तैयार करने में सभी शिक्षकों ने बहुत मेहनत की है। यह बच्चे उन समुदायों से निकल कर आये जिनका पारिवारिक, आर्थिक स्तर बहुत ही कमजोर है, सामाजिक भेदभाव के साथ पूरे समुदाय में शिक्षा के प्रति गहरी उदासीनता बनी रही है। हमारे शिक्षक गांव से लेकर शहरों की गरीब बस्तियों के 221 बच्चों को चयनित कर शिक्षा दे रहे है।

जिन बच्चों को कोई अपने पास नहीं बैठाना चाहता था, उन बच्चों को पढ़ाना शुरू किया : ज्योति जैन

ज्योति के लिए यह रास्ता इतना आसान नहीं था। जब उन्होंने बच्चों को पढ़ाना शुरू किया था सबसे पहली समस्या थी बच्चों को चुनना। ग्रामीण परिवेश होने के साथ– साथ सामाजिक भेदभाव के कारण जो बच्चे शिक्षा से अछूते रह गए थे उनके लिए पहले कोई पढ़ाने को तैयार नहीं था। ज्योति कहती है जब पहली बार बच्चों की खोज करने गई और उनके माता पिता से बात की, मैं आपके बच्चों को निःशुल्क पढ़ाऊगी। आश्चर्य लगा उन्हें भी, जब भी वे पूछने जाते थे अन्य कोचिंग के शिक्षकों से तो मना करते थे, क्योंकि अधिकांश बच्चे विभिन्न समुदायों से थे। जिन्हें पढ़ाना तो दूर कोई अपने पास भी बिठाना नहीं चाहता था पर आज वह सभी बच्चे सब के साथ खेलते हैं–पढ़ते हैं। पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी बढ़ाते हुए इस अलख को जगाने का श्रेय उन्हें जाता है जिन्होंने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक नयी तकनीक से पढ़ाई का बीड़ा उठा रखा है। पढ़ाई के प्रति छोटे–छोटे बच्चों की उत्सुकता देखनी हो या फिर शिक्षा के प्रति शिक्षक की प्रतिबद्धता और समर्पण। बच्चों की मासूमियत बरबस ही आपका ध्यान अपनी ओर खींच लेगी।

गांव में जहां पढ़ने की आदत छूटने के बाद बच्चे दुबारा स्कूल लौटना पसंद नहीं करते हैं। कोरोना के कारण सबसे बड़ी समस्या एक यह भी देखने में आ रही थी कि बच्चों को निरंतर शिक्षा से कैसे जोड़े रखे और उन्हें स्कूल तक कैसे ले जाएं। आर्थिक व सामाजिक पिछड़ेपन का दंश झेल रहे इस गांव में खेती बाड़ी व दिहाड़ी पर ही अधिकांश ग्रामीणों का गुजर–बसर चलता है। लंबी छुट्टी के समय अभिभावक अपने बच्चों को जानवरों को चराने या वे मजदूरी के लिये बाहर जाते है साथ ले जाते है। किन्तु जब से गांव में ज्योति ने घर के सामने के छोटे बरामदे में शिक्षा की शुरुआत की है, इस अनूठी पढ़ाई से उन्हें भी खुशी प्राप्त हो रहा है और उनके बच्चे भी मन लगाकर पढ़ रहे हैं। पढ़ने के प्रति बच्चों में अभूतपूर्व जिज्ञासाएं बढ़ी है। इस काम में ग्रामवासियों का भी पूरा समर्थन उन्हें प्राप्त हो रहा है। वर्तमान में लीफी फैलोशिप अभियान अंतर्गत 45

बच्चों को चयनित कर शिक्षित कर रही हैं। तीन महीने की अवधि में बच्चों के बौद्धिक विकास में अच्छा परिवर्तन आया है। फैलोशिप अभियान की शुरुआत करने में ज्योति को भी बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है क्योंकि वे अकेले कभी अपने घर से बाहर नहीं गई थीं और यह उनके समुदाय के लिए भी बड़ी बात थी। कोई लड़की ट्रेनिंग लेकर बच्चों को शिक्षित करने का प्रयास कर रही है। ज्योति बताती है औपचरिक प्रक्रियाओं के बाद मेरा चयन हो गया था। साक्षात्कार टीम ने ट्रेनिंग के लिए पंजाब की जानकारी दी। मेरे लिए तुरंत 'हां' बोलना बहुत बड़ा कदम था क्योंकि इसके पहले में कभी अकेले बाहर नहीं गई थी। मैंने मम्मी से बात की तो उन्होंने मना कर दिया। उनका कहना था लड़कियों को ऐसे अकेले अनजान लोगों के साथ बाहर नहीं भेजते। उन्होंने कहा लोग क्या कहेंगे?

ऐसे हजारो सवाल थे, जिनके जबाव मेरे पास नहीं थे। बड़ी मुश्किल से मम्मी-पापा ने जाने को हां कहा, मुझे डर था कभी ऐसे माहौल से परिचित नहीं थी। मैं आकांक्षा जी के विश्वास पर जा रही थी। ट्रेन की यात्रा में हम सभी घुलमिल गए थे, आनंदपुर साहेब पहुंचकर लीफी टीम से मिलकर लगा हम अभी नहीं बल्कि बहुत पहले से एक दूसरे से परिचित है। ट्रेनिंग स्थान बहुत ही सुन्दर-पूर्ण प्राकृतिक था। जब ट्रेनिंग शुरू हुई तो रमन जी, गायत्री जी, फनसब जी, रुबीना जी तथा गगन भैया ने कई एक्टिविटीज करवाईं। जो बहुत ही अलग और अनोखी होती थीं। जैसे- हंस कली कली का, मशीन गन ताली और अनेकों खेल बहुत अच्छे लगे। युवा शिक्षक के तौर पर तीन माह से बच्चों को पढ़ा रहे है। हर सप्ताह पूर्ण दिशा-निर्देशन मिलता है। मुझे अच्छा लगता इन बच्चों को पढ़ा कर जब भी बच्चों के माता-पापा से मुलाकात होती तो कहते बच्चे सीख रहे है। साथ ही जब पूरे समुदाय को पता चला कि में पंजाब से ट्रेनिंग लेकर आई हूं। सभी ने बहुत सराहना की और पूरे समुदाय में भेदभाव के प्रति सोच बदली है। बच्चों की शिक्षा को लेकर इसी बात को लेकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि एक बच्ची के पिता दिल्ली में काम करते है, उस बच्ची का एडमिशन मैंने लीफी के अंतर्गत किया था। मैंने जब उनसे बात की तो वह गांव में आकर बस गए और कहते हैं कि जब तक बच्ची की शिक्षा पूरी नहीं हो जाती मैं यही रहूंगा। मुझे गर्व महसूस होता है कि मेरे कारण कई बेटियों का भविष्य उज्जवल होगा।

बच्चों के अभिभावक बोलते थे कि उनका मन नहीं लगता पढ़-लिखकर क्या करेंगें, इनकी शादी करना है : प्रियंका साहू

प्रियंका संत रविदास वार्ड में 45 बच्चों को चिन्हित कर शिक्षित कर रही है, उन्होंने शिक्षा के सभी पहलुओं पर चर्चा करते हुए अवगत कराया। अधिकांश बच्चे अपने माता-पिता की वित्तीय कठिनाइयों के कारण शिक्षा से वंचित हैं। इस पृष्ठभूमि में स्कूल से बाहर, अनियमित और प्रवासी बच्चों को स्कूल की मुख्यधारा में लाने के लिए उन्होंने इस अभियान के माध्यम से बच्चों को जोड़ने में बहुत कठनाइयों का सामना करना पड़ा। प्रशिक्षण उपरांत हम सभी को सभी दिशा-निर्देशन प्राप्त हुए थे कि बच्चे कौन है? जिन्हें हमें पढ़ाना है? उन्हें कैसे ढूंढना है? उसके पैमाने अलग-अलग तय किए गए थे। यह शहरी क्षेत्र जरूर था लेकिन गरीब तबकों के बच्चों के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा अपने आप में कल्पना थी। इनमें से अधिकांश बच्चे शादी -ब्याह के अवसर या सामाजिक समारोहों में लाइटिंग का काम करते है। एक ही परिवार की तीन बच्चियों ने पूर्णता शिक्षा को छोड़ दिया था उनसे बात करने पर उन्होंने कहा कि मेरा मन नहीं लगता है। बच्चियों के साथ-साथ परिवार को समझाने में काफी वक्त लगा उनका अक्सर कहना था कि अब उन बच्चों का पढ़ने में मन ही नहीं लगता और इससे अधिक समझाने पर कह देते कि अब तो इनकी शादी करनी है। क्या करेंगे पढ़ लिखकर? कोरोना ने बने बनाये मानसिक स्तर को हिला दिया था। बच्चों की पढ़ाई से संबंधित सभी आदतें जा चुकी थी उन्हें पुन: एक से 2 घंटे विषय से जोड़ना काफी कठिन था।

शुरुआत में अक्सर यही देखने को मिलता कि अगर उनके मां-बाप से चर्चा की जाए कि हम आपके बच्चों को नि:शुल्क पढ़ाएंगे तो उन्हें संदेह भर जाना स्वाभाविक था। क्योंकि उनके लिए इतना करना या समझना अभी तक किसी ने नहीं किया था। लगातार 3 महीनों के कुशल मार्गदर्शन में हम सभी ने बच्चों के मनोबल को बढ़ाना, उन्हें प्रोत्साहित करके उन्हें शिक्षा से जोड़ना साथ ही अब सभी बच्चे अक्षर ज्ञान, अंक, रेखाएं, आकृतियां के साथ स्वाभाविक रूप से पढ़ रहे हैं। अब कभी-कभी मन इसलिए भी भर जाता है कि सभी बच्चे अगर कोई छुट्टी पड़ती है तो स्वयं कहने

लगते हैं कि आज कक्षाएं कब से प्रारंभ होगी। अभियान के शुरुआती दौर में बच्चों के साथ साथ उनके माता-पिता को भी काफी मुश्किल लग रहा था। क्योंकि बच्चे भी उनके कार्यों के साथ-साथ एक वित्तीय सहयोग में शामिल हो रहे थे। एक बार स्कूल छोड़ने के बाद उन्हें दूसरा उसे जोड़ना एक असंभव सा महसूस हो रहा था पर मुझे पूरी उम्मीद है। 2 वर्षीय कार्यकाल के दौरान सभी बच्चे निश्चित रूप से माध्यमिक शिक्षा में शामिल होंगे। हमे ऐसे प्रयासों की बहुत ही आवश्यकता है।

अभी भी सैकड़ों बच्चे शिक्षा से वंचित हैं। वे शायद कहीं रोड के किनारे झुग्गी झोपड़ियों में रहते हो या आर्थिक रूप से कमजोर माता-पिता होने के कारण उन्हें शिक्षा नहीं दे पा रहे हो। अशिक्षित होने के कारण माता-पिता के या महत्वपूर्ण कारण चाहे जो भी हो परन्तु एक सभ्य समाज पर ही एक देश का भविष्य निर्भर करता है। जिसमें जागरूकता के साथ कर्तव्यशील हो।

मुझे पारिवारिक रूप से काफी सहयोग मिला है। संत रविदास वार्ड में सरिता दीदी बहुत ही सक्रिय रूप से सहयोग करती है। उनके मार्गदर्शन लीफी फैलोशिप अभियान से जुड़कर बच्चों को पढ़ाने का मौका मिला। तीन दिन की ट्रेनिंग में हम सभी ने खेल विधियों से सीखा कि बच्चों को शिक्षा के लिए कैसे तैयार करना है।

ऐसा अवसर हम सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है साथ ही जब हम कहीं बाहर जाते हैं तो आसपास के पूरे क्षेत्र में यह संदेश जाता है कि वे भी अपनी बेटियों को आगे बढ़ने का मौका दें। यह अनुभव काफी सुखद एवं सीखने वाला रहा।

बच्चों को शिक्षा के लिए तैयार किया अब वे स्वयं से सीखने में समर्थ हो रहे हैं : काजल जैन

काजल शुरू से ही कठिन परिस्थितियों से लड़ते हुए आई है, बहुत कम ही उम्र में पापा के मित्र के सहयोग और मार्गदर्शन के साथ उन्होंने खुद के बलबूते पर स्वयं एवं सैकड़ों बच्चों के जीवन में उजाला लाने का प्रयास किया है।

वे अपना पुराना अनुभव बताते हुए कहती हैं कि हमारे पास बच्चे नामांकित तो थे, लेकिन वे कक्षा में नहीं आ रहे थे। जब हमने उनके स्थानीय क्षेत्र में जाकर पूरी घटना का जायजा लेने का प्रयास किया। हम पाते है, उनके पास जीवन की मूलभूत सुविधाएं ना के बराबर है। रहने को घर नहीं, पूरी बस्ती कचरे और गंदगी से भरी हुई, उन्होंने अपने घर टीन और चद्दर या आसपास की चीजों से जोड़कर बनाए हुए थे। हमने बच्चों के माता-पिता से जब बात की तो उनका जबाब था, बच्चों को हम पढ़ने क्यों भेजें। उससे पैसे तो मिलने वाले हैं नहीं, जब हमारे पास खाने को नहीं, तो उन्हें पढ़ाकर क्या करेंगे? यह बच्चे आसपास की मंडियों में काम करते या फिर छोटी-बड़ी होटलों में काम करते थे। कचड़े से प्लास्टिक निकालना और जो भी उनके लिए एक आय का स्रोत बने उसके लिए काम करते थे। अगर कहा जाए भौतिक सुख सुविधाओं के नाम पर उनके पास ना ड्रेस थी ना, अच्छा खाना। हमने किसी तरह से बच्चों के माता-पिता को बच्चों को कक्षा में भेजने के लिए तैयार कर लिया।

हमारे सामने अब और भी नई चुनौतियां खड़ी होती जा रही थी अधिकांशतः बच्चे नशे से जुड़े हुए थे। उनकी बौद्धिक मानसिकता शिक्षा के प्रति अधिक नकारात्मक थी। कुछ भी बोल देना। इन पर पूरे समुदाय का प्रभाव पड़ा हुआ था। यह जीवन के उस सच से गुजरे हुए थे जो हम कल्पना में भी नहीं सोच सकते। उन बच्चों के न तो बाल कटे, न नहाते थे। हमारे सामने एक सामूहिक चुनौती थी। सबसे पहले बच्चों को शिक्षा के लिए तैयार करना।

हमारे पास अम्मा थी जो बच्चों को नहला देती थीं। यह हम सबने मिलकर बखूबी किया बहुत जल्द सभी बच्चों में बदलाव देखने को मिला और हमारा यह क्रम निरंतर चलता रहा आज जब मैं उनके बच्चों से मिलती हूं तो काफी खुशी मिलती है। लड़के एवं लड़कियां समान रूप से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

अब मैंने नए बच्चों को नामांकित किया। बच्चों के माता-पिता समय समय पर आकर उनकी शिक्षा की स्थिति को समझते हैं। मैं एक और महत्वपूर्ण बदलाव के बारे में बात करूं तो लीफी के माध्यम से मुझमें यह काफी प्रभावकारी रूप से बदलाव आया जो लर्निंग आधारित मॉडल है। 'सीखो और खेलो'

इसके लिए मैं अपना एक व्यक्तिगत उदाहरण सांझा करूं तो मैं पहले बहुत ही ज्यादा सख्त हुआ करती थी। मुझे लगता था कि बच्चों को अनुशासन के साथ जोड़ना काफी प्रभावकारी होगा। लेकिन अब मैं बच्चों से काफी अच्छे से जुड़ पाती हूं। लीफी का मूल पाठ्यक्रम मुख्य रूप से सभी बच्चे मनोरंजन के साथ पढ़ते हैं। वे चीजों को करते हैं सीखते हैं और फिर बताते हैं। लीफी का शैक्षिक मॉडल को अधिक प्रभावी रूप कर सकते है। अब उनकी आदतों में काफी स्तर तक सुधार आया है। स्वयं से सीखने में अब समर्थ हो रहे हैं। उन्हें अब कोई कुछ भी जब पढ़ाता है जैसे- शुद्ध लेख, अक्षर ज्ञान हो गणित हो, कंप्यूटर हो वह सब कुछ सीखना चाहते हैं। वे गाना गाते हैं, डांस करते है। वे कहती हैं मैंने अभी तक के पूरे जीवनकाल को कठिन समय में जिया है। जिसमें किसी का कोई मदद नहीं मिली। मेरे चाचा जी थे जिन्होंने मेरी हर कदम पर मदद की।

मुझे याद है मैंने 2010 के लगभग 2 बच्चों को सामान्य तौर पर पढ़ाना शुरू किया था और उसी से पढ़ाने का करियर शुरू होता है। मैं सभी से यही कहना चाहूंगी कि हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि कुछ भी करना असंभव है। मैं भी अगर चाहती तो अपने भाइयों की तरह पढ़ाई छोड़ सकती थी। लेकिन मैंने पढ़ाई नहीं छोड़ी। मुझे फॉरेंसिक ऑफिसर बनना था। अभी भी मन में है। एक बात और हम सभी को अपने स्तर से इस समाज को बेहतर बनाने के लिए हमेशा प्रयास करने चाहिए चाहे वह कार्य कोई भी हो।

स्कूल छोड़ चुके बच्चों की तलाश की, 41 बच्चों को पढ़ाना शुरू किया, सभी बच्चों में व्यवहारिक रूप से बदलाव स्पष्ट रूप से समझ आ रहा है : कविता यादव

लीफी अभियान की शुरुआत से 3 महीने का सफर हमारे लिए बहुत उत्साह, नवाचार को प्राथमिकता देने वाला रहा हैं। कोरोना महामारी के समय सभी स्तर के बच्चों की शिक्षा वृहद स्तर पर प्रभावित हुई थी। यह बात तो लगभग सभी जानते हैं, कोरोना की सबसे अधिक मार गरीब वर्गों के बच्चों पर पड़ी है। न तो उनके पास मोबाइल और लैपटॉप जैसी सुविधाएं थीं इसलिए ऑनलाइन शिक्षा पद्दति से उनकी शिक्षा को जारी रखना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। कोरोना के जाने के बाद हजारों बच्चों ने एक साथ स्कूल छोड़ा। जो बच्चों पुन: स्कूल में नामांकित तो हो गए लेकिन उनका शैक्षणिक स्तर बहुत ही कमजोर हो चुका था। हम लोग जब बच्चों के ओरल और रिटर्न असिसमेंट ले रहे थे, तो यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ रही थी। आस-पास में रहने वाले बच्चों के साथ उन बच्चों तलाश थी जो शिक्षा को छोड़ चुके थे।

विचार समिति ने लॉकडाउन के दौरान अंत्योदय शिक्षा प्रेरक अभियान के माध्यम से शिक्षा का प्रशिक्षण दिया। वह शिक्षण मेरे जीवन के अमूल्य अनुभवों में शामिल रहेगा। ये अनुभव जिसमें एक शिक्षक के तौर पर टेक्नोलॉजी के साथ-साथ, सामाजिक गतिविधियों को भी समझने-समझाने का अवसर मिला ।

इस अभियान के अंतर्गत मैंने 41 बच्चों को पढ़ाना शुरू किया था। इन बच्चों को अक्षर ज्ञान से लेकर आकृतियां और विभिन्न प्रकार की क्रियाएं से जोड़ना था। हर दिन अलग-अलग तरीकों और अलग-अलग विषयों का पढ़ाना। हम लगातार एक अच्छी प्रगति पर कार्य कर रहे हैं। मेरे सभी बच्चों में अब व्यावहारिक रूप से बदलाव स्पष्ट रूप से समझा और देखा जा सकता है। एक शिक्षक के लिए सबसे प्रिय उसके छात्र होते हैं और मेरे द्वारा किये गए हर प्रयास की वजह भी ये बच्चें ही हैं। इन बच्चों का शोर करना, उन्हें पढ़ना, उन्हें कभी प्यार तो कभी सख्ती से समझाना, ये सभी बातें मेरे साथ रहेंगी।

सर्वे के माध्यम से बच्चों के ज्ञानात्मक स्तर की जांच कर उनके शैक्षणिक स्तर को परखा : पूजा मिश्रा

लीफी प्रशिक्षण के उपरांत हम सभी को आगे की रणनीतियों पर काम करना था इसमें सबसे बड़ी चुनौती थी कि बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करना, साथ ही परिवार को शिक्षा की आवश्कता से अवगत करवाना, उन बस्तियों या कई जगहों से बच्चो को चुनना जिनका स्कूली शिक्षा से अधिकतर वास्ता नहीं रहा है। हमने सामान्य सर्वे के माध्यम से बच्चों के ज्ञानात्मक स्तर को परीक्षण के माध्यम से जांच की जिसके माध्यम से बच्चों की आवश्कताओं शैक्षणिक स्तर को परखा और अलग-अलग बैच बनाकर उनकी शिक्षण प्रक्रिया को शुरू कर दिया था लगातार कुछ बच्चों की अनियमितताओं के कारण उनके घर पर जाना, बच्चों के माता-पिता से जानना, बच्चे शिक्षा में शामिल क्यों नहीं हो रहे। यह बच्चे अधिकतर समय अपने माता पिता के साथ उनके कार्यों में सहयोग देते थे। यह सहयोग अल्पकालिक जरूर था लेकिन उन्हें नियमित शिक्षा से दूर कर रहे थे। सीखना और सिखाना लीफी की मुख्य भूमिका में था। पाठ्यक्रम के साथ पदाधिकारियों का काफी सहयोग मिला। उन्होंने हमेशा हमारा हौसला बढ़ाया। अगर कोई कार्य समय पर नहीं कर पाये तो उन्होंने उसे पूर्ण कराने में हमारी पूरी मदद की। हम भी इस कार्य को बखूबी समझ रहे थे।

हम उन सभी बच्चों को पढ़ाना चाहते है परंतु अक्सर छोटी-मोटी समस्या तो देखने में आ ही जाती है। अब दैनिक रूप से सभी बच्चे नियमित होते हैं। सभी बच्चे समय पर कक्षा में आ जाते हैं। वे सीख रहे हैं। मेरा यही मानना है कि अच्छी शैक्षणिक गुणवत्ता के अभाव में डिग्रियां का कोई महत्व नहीं है। जिस कक्षा में बच्चे हैं उन्हें उस कक्षा के बौद्धिक स्तर का ज्ञान होना भी अति आवश्यक है। उन्होंने अपने समुदाय के सभी बच्चों के परिजनों को शिक्षा के महत्व को लेकर हमेशा जागरूकता के साथ काम किया है। वे कहती हैं कि बच्चे सिर्फ न कि अपना जीवन सुधार सकेंगे बल्कि आपके जीवन में भी उन्हीं के माध्यम से परिवर्तन आ सकेगा। बच्चों के अधिकांशतः परिवार किसानी करते हैं या मजदूरी उनके पास इतना समय नहीं होता कि वे बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दे सकें। वे क्या पढ़ते हैं ? कैसे पढ़ते हैं? सकारात्मक परिणाम के लिए शुरुआती दौर में काफी मेहनत करनी पड़ी।

क्वेस्ट अलायन्स संस्था एवं विचार समिति मिलकर करेंगे शिक्षक प्राशिक्षण और महिला स्वरोजगार पर कार्य

विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया क्वेस्ट अलायन्स संस्था से आई कार्यक्रम सहयोगी पल्लवी मिश्रा को गोबर से बने दिये भेंट करते हुए।

क्वेस्ट अलायन्स संस्था (दिल्ली) भारत के 12 राज्यों में शिक्षा पर कार्य कर रही है। क्वेस्ट जीवन के लिए स्वयं से सीखने को प्रोत्साहित करता है, जो अनुभवों और प्रतिबिम्बों के परिणाम पर आधारित होता है। जिसमें मुख्य रूप से शिक्षक की क्षमताओं का विकसित करना, परिणामस्वरुप सशक्त शिक्षार्थियों को बनाना, क्वेस्ट अलायन्स का मानना है केवल शिक्षकों, नागरिक समाज, उद्योग और सरकार को शामिल करके ही हम स्व-शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण बना सकते हैं, ताकि आज के युवा अपने लिए उद्देश्य खोज सकें और बना सकें।

क्वेस्ट लक्ष्यों में 2023 तक देश भर में 40 लाख शिक्षार्थियों और सूत्रधारों के साथ कार्य करना है। क्वेस्ट अलायन्स कार्यक्रम सहयोगी पल्लवी मिश्रा ने विचार समिति कार्यालय का भ्रमण किया। समिति कार्यप्रणाली की जानकारी से अवगत करवाते हुए समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने पर्यावरण, मोहल्ला विकास योजना तथा महिला सशक्तिकरण के लिए चलाए गए जागरूकता अभियान के साथ स्वरोजगार के लिए गोबर परियोजना की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि इस परियोजना के माध्यम से हम जरूरतमंद महिलाओं को स्वरोजगार उपलब्ध करवा सकेंगे। अभी तक दो वर्ष में परियोजना से 1000 से अधिक महिलाओं को लाभ मिला है, साथ ही स्वदेशी एवं प्राकृतिक उत्पादों का भी महत्व बड़ा है। हम सभी का प्रयास है कि इस दिशा में अधिक से अधिक काम किए जाएं।

क्वेस्ट अलायन्स कार्यक्रम सहयोगी पल्लवी मिश्रा ने समिति परियोजनाओं पर सामूहिक रूप से चर्चा के माध्यम से जाना साथ ही उन्होंने गोबर दिया परियोजना के अंतर्गत महिलाओं से मुलाकात कर पूर्व व्यवसाय की जानकारी ली। महिलाओं ने उन्हें बताया कि पेटीकोट बनाकर प्रति प्रतिकोट 3 रुपये ही बचते थे और मेहनत भी बहुत अधिक होती थी। गोबर दिया बनाकर 350 से लेकर 500 रूपये कमा सकते है और बेचने की कोई समस्या नहीं आती है। साथ ही उन्होंने लीफी फैलोशिप अभियान अंतर्गत चल चल रही कक्षाओं का निरीक्षण किया। इसकी जानकारी सोशल मिडिया पर शेयर करते करते हुए उन्होंने लिखा कि इस दृश्य को देखकर आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह बच्चे छोटे-छोटे बरामदों में पढ़ रहे हैं। इनके माता पिता की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि वे स्कूल की फीस भर सकें। ऐसे उदाहरण ही शायद सच करते हैं 'शिक्षा द्वार है ज्ञान के घर का'

समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने जानकारी देते हुए कहा कि क्वेस्ट अलायन्स एवं विचार समिति दो लक्ष्यों के साथ कार्य करेगी जिसमें शिक्षक प्राशिक्षण के लिए वर्चुअल माध्यम से 21वीं सदी के कौशल, मार्ग निर्देशन, लैंगिक समानता, संचार के साथ कैरियर उन्मुखीकरण के माध्यम से सही मार्गदर्शन करना आदि। महिला स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए अन्य स्व-नियोजित, व्यापार के अवसर और बाजार अनुसंधान की पहचान, एक व्यवसाय का संचालन, व्यवसाय का वित्तपोषण, एक व्यवसाय के लिए संसाधन, एक प्रोटोटाइप का निर्माण और व्यवसाय में चुनौतियों का समाधान, मार्केटिंग और व्यापार का भविष्य को ध्यान में रखते हुए कार्ययोजना बनाई जाएगी।

समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा हम मुख्य रूप से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। हमारी अभी एक ऐसी महिला से मुलाकात हुई जो घर से अकेली कभी बाहर निकली ही नहीं थीं। अभी भी ऐसी बहुत महिलायें हैं जो ऐसी स्थिति में है।

इस अवसर पर समिति मुख्य संगठक नितिन पटैरिया, आर्मी पब्लिक स्कूल प्रिंसिपल उपस्थित थे।

खुशियां बांटने से बढ़ती हैं और दुख बांटने से घटता है : कपिल मलैया

संजीवनी बाल आश्रम में सह-परिवार मनाई बच्चों के साथ दीपावली

समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने सह-परिवार सहित संजीवनी बाल आश्रम में बच्चों के साथ दीपावली मनाई।

प्रतिवर्ष की तरह समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने सह-परिवार संजीवनी बाल आश्रम जाकर अनाथ बच्चों के साथ दीपावली की खुशियां बांटी। उन्होंने बच्चों को मिठाइयां, पटाखे एवं गोबर से बने दिये भेंट किये। उन्होंने कहा खुशियां बांटने से बढ़ती हैं और दुख बांटने से घटता है। दीवाली खुशियों का त्योहार होता है, त्योहार के समय कुछ वक्त उनके साथ बिताने से उन्हें खुशी मिलेंगी। हम सभी की यह सामूहिक जिम्मेदारी है इन बच्चों को कभी अनाथपन महसूस न हो। जितना हो सके बच्चों के लिए कुछ न कुछ करते रहें।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा के वार्षिक अधिवेशन में कपिल मलैया को गौरव सम्मान से नवाजा गया

समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया को गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया को गौरव सम्मान से नवाजा गया। इस अवसर पर गोलापूर्व महासभा अध्यक्ष संतोष जैन ने बताया गौरव सम्मान श्री सिंघई राजाराम जैन स्मृति गोलापूर्व महासभा के द्वारा समाज विकास में किये गये विशिष्ट अवदान एवं विभिन्न धार्मिक, साहित्यिक, सामाजिक अवसरों पर समाज की अद्वितीय सेवा के लिए गोला पूर्व महासभा द्वारा अलंकृत किया जाता है।

समिति मीडिया प्रभारी अखलेश समैया ने जानकारी देते हुए कहा कि कपिल मलैया पर्यावरण, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य सुरक्षा, स्वरोजगार, खेल सहित अनेक सामाजिक गतिविधियों में वर्षों से सक्रिय रह कर समाजसेवा का कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में गांव-गांव जाकर जनजागरूकता अभियान के माध्यम से बेटियों और महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए जागरूक करने का कार्य किया है। इस अवसर पर विचार समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत, मार्गदर्शक श्रेयांश जैन, गोलापूर्व महासभा महामंत्री सुभाष चौधरी, सम्मान सयोंजक विनोद कुमार जैन उपस्थित थे।

मीडिया कवरेज

https://epaper.patrika.com/Home/PrintArticle?OrgId=2797402f3e

पत्रिका
Sagar City, 27/09/2022, Page 09

पत्रिका शक्ति रूपा

नवरात्र विशेष

हर सफल व्यक्ति के पीछे एक औरत का हाथ होता है, पढ़ें सफलता की ऐसी ही कहानी।

हर हाथ को बनाया हुनरमंद मेहनत का मिल रहा इनाम

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सागर. समाज में अलग पहचान बने, वह एक शक्ति के रूप में पहचानी जाएं इसके लिए आंकाक्षा मलैया अपनी विचार संस्था के माध्यम से रोजगार के नए अवसर पैदा करने में लगी हैं। डॉ. हरीसिंह गौर विद्यालय से एलएलबी की पढ़ाई पूरी कर चुकीं आकांक्षा ने पिता से सेवा की प्रेरणा लेकर 2016 में अपने आप को समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया। आकांक्षा के पिता कपिल मलैया शहर के बड़े कारोबारी हैं। मरुति कार के डीलर, पेट्रोल पंप के मालिक और रियल स्टेट के क्षेत्र में व्यवसाय करते हैं।

बेटी की रूप में : आकांक्षा ने बताया कि हमारे परिवार में हम एक-दूसरे सदस्यों को समय देते हैं। माता-पिता के साथ रहूं इसलिए मैंने सागर से ही पढ़ाई पूरी की। दादा-दादी की सेवा करना भी मुझे अच्छा लगता है। हमारा पूरा परिवार सुबह-शाम एक साथ खाना खाता है। छोटी बहन अनुष्का के साथ सयम व्यतीत करती हूं। मां के साथ खाना भी बनाती हूं। मेरे परिवार में कई पीढ़ियां समाज सेवा करती चली आ रही हैं।

यह है भविष्य का विजन : आकांक्षा उत्कृष्ट शिक्षा के साथ समाज सेवा करना चाहती हैं। उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में हिस्सा लिया है। वह बताती हैं कि मेरा विजन महिलाओं आत्मनिर्भर बनाना है। मैं उन महिलाओं को रोजगार से जोड़ रही हूं जो गरीब हैं। कई महिलाएं रोजगार मिलने के बाद अपने परिवार की जिम्मेदारी भी ले रही हैं।

ऐसे बनाई अपनी अलग पहचान

आंकाक्षा ने पिता कपिल मलैया के व्यवसाय से अलग अपनी पहचान बनाई। आकांक्षा अपनी विचार संस्था के माध्यम से महिलाओं को रोजगार देकर आत्मनिर्भर बना रही हैं। महिलाओं पर होने वाले अपराधों को रोकने के लिए स्कूल-स्कूल जाकर जागरूकता अभियान चलाया। उन्हें रोजगार देने के लिए कम्प्यूटर शिक्षा, हथकरघा और गोबर के दीपक बनाने की ट्रेनिंग दे रही हैं। इस वर्ष दिवाली के लिए 750 महिलाओं ने घरों पर ही गोबर के 7 लाख दीपक बनाए हैं। जो विभिन्न ऑनलाइन पोर्टल, स्थानिय बाजार और मेलों में इस दिवाली पर बिक्री के लिए उपलब्ध रहेंगे। इन महिलाओं की दीपावली पर यह पहली कमाई होगी।

Piyush Goyal @PiyushGoyal

Well done!

Let us all together make #VocalForLocal a big success.

> **Dr. Swapnil Mantri** @drswapnilmantri · 2h
> Vichar Samiti is getting 7,00,000 cow dung diyas made from 258 poor women. These lamps are non-flammable, float in water, pollution free and mix with soil to become compost. Requesting to light this lamp and keep the environment pure. @PMOIndia @narendramodi #VocalForLocal

10:04 PM · Oct 21, 2022 · Twitter Web App

गोमाता के गोबर से सजा दीपों का बाजार, पवित्र दीयों से रोशन होगी दीपावली
Deepawali 2022: सागर में दीपक बाजार में स्थानीय महि...
hindi.oneindia.com

Oneindia
गोमाता के गोबर से सजा दीपों का बाजार, पवित्र दीयों से रोशन होगी दीपावली
https://hindi.oneindia.com/news/madhya-pradesh/deepawali-2022-diyas-made-of-cow-dung-artistic-lamp-deepawali-will-be-illuminated-721427.html

8:27 AM

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti

Bank- State Bank of India

Account No.- 37941791894

IFSC code- SBIN0000475

Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi

आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए

QR कोड को स्कैन करें.

BHIM UPI

VICHAR SAMITI

Pay With Any App

G Pay Paytm PhonePe WhatsApp amazon

150+ Apps

Powered By BharatPe

- संपर्क -

Website : vicharsamiti.in

Facebook : Vichar Samiti

Youtube : Vichar Samachar

Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488

Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002